This question paper contains 2 printed pages.

***Your Roll No.* ....**

Sl. No. of Ques. Paper	**: 7805**	**GC**
Unique Paper Code	**: 52051123**	
Name of Paper	**: हिन्दी भाषा और साहित्य – हिन्दी 'ग'**	
Name of Course	**: B.Com. (Prog.)**	
Semester	**: I**	
Duration	**: 3 hours**	
Maximum Marks	**: 75**	

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

   (क) हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

   (ख) हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय

   (ग) भक्तिकाव्य की निर्गुण धारा की विशेषताएँ

   (घ) रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

   (ड) प्रयोगवादी काव्य की विशेषताएँ। 5×3=15

2. कबीर की कविता का महत्त्व लिखिए।

अथवा

सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखिए। 10

3. बिहारी के दोहों की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

घनानन्द का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

4. मैथिलीशरण गुप्त की 'नर हो न निराश करो मन को' कविता की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

सुमित्रानंदन पंत की कविता 'आह धरती कितना देती है' का भावार्थ लिखिए। 10

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

   (क) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
   कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

अथवा

मैया ! मैं नहिं माखन खायो ।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायो ।।
देखि तुही छींके पर भाजन ऊँचे धरि लटकायो ।
हौं जु कहत नान्हें कर अपने मैं कैसें करि पायो ।।
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो ।
डारि साँटि मुसुकाइ जशोदा स्यामहिं कंठ लगायो ।। 10

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात ।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये ।
त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारिये ।। 10

(ग) करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो ।

अथवा

छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं प्यारी—
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे—
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से ! 10